12077CH07

## षष्ठः पाठः

# नैकेनापि समं गता वसुमती

प्रस्तुत पाठ बल्लाल सेन रचित भोजप्रबन्ध के 'भोजराजस्य राज्यप्राप्तिप्रबन्ध' अंश का सम्पादित एवं संक्षिप्त रूपान्तरण है। मनुष्य के मन में जब लोभ छा जाता है, तब वह किसी प्रकार निष्ठुर होकर घृणित से घृणित कार्य करने से नहीं हिचकिचाता यह इस कथानक द्वारा प्रतिपादित किया गया है। इस पाठ में भोज के चाचा मुञ्ज, बालक भोज को मरवाने का षड्यन्त्र बनाते हैं, परन्तु भोज उस मृत्युकाल में मुञ्ज के नाम एक सन्देश देते हैं, जिसमें मान्धाता, रावण आदि का उदाहरण प्रदर्शित करते हुए संसार की नश्वरता प्रदर्शित की गई है। इस श्लोक को पढ़कर न केवल भोज का वध करने वाले का मन परिवर्तित हो गया, अपितु मुञ्ज को भी वैराग्य आ गया तथा भतीजे के वध से दुःखी होकर प्रायश्चित्तस्वरूप अग्नि में प्रवेश करना चाहता है। परन्तु वत्सराज तथा बुद्धिसागर की योजना से भोज पुनः जीवित घोषित कर दिया जाता है। मान्धाता च महीपतिः यह श्लोक संस्कृत साहित्य की अमूल्य निधि के रूप में प्रसिद्ध हो गया है।

**पुरा धाराराज्ये सिन्धुल-संज्ञो राजा चिरं प्रजाः पर्यपालयत्। तस्य वार्धक्ये भोज इति पुत्रः समजनि। सः यदा पञ्चवार्षिकस्तदा पिता ह्यात्मनो जरां ज्ञात्वा मुख्यामात्यानाहूयानुजं मुञ्जं महाबलमालोक्य पुत्रं च बालं संवीक्ष्य विचारयामास-यद्यहं राज्यलक्ष्मीभारधारणसमर्थं सहोदरमपहाय राज्यं पुत्राय प्रयच्छामि, तदा लोकापवादः। अथ वा बालं मे पुत्रं मुञ्जो राज्यलोभाद्विषादिना मारयिष्यति तदा दत्तमपि राज्यं वृथा। पुत्रहानिर्वंशोच्छेदश्च इति विचार्य राज्यं मुञ्जाय दत्त्वा तदुत्सङ्गे भोजमात्मानं मुमोच।**

**ततः क्रमाद् राजनि दिवङ्गते सम्प्राप्तराज्य-सम्पत्तिर्मुञ्जो मुख्यामात्यं बुद्धिसागरनामानं व्यापारमुद्रया दूरीकृत्य तत्पदेऽन्यं नियोजयामास। अथ कदाचन सभायां ज्योतिःशास्त्रपारङ्गतः कश्चन ब्राह्मणः समागम्य राजानम् आह - देव! लोकाः मां सर्वज्ञं कथयन्ति। तत्किमपि यथेच्छं पृच्छ।**

© NCERT not to be republished

**ततो मुञ्जः प्राह–भोजस्य जन्मपत्रिकां विधेहि इति। विप्रः जन्मपत्रिकां विधाय उक्तवान्–**

**पञ्चाशत्पञ्चवर्षाणि सप्तमासदिनत्रयम्।**
**भोजराजेन भोक्तव्यः सगौडो दक्षिणापथः॥**

**भोजविषयिणीम् इमां भविष्यवाणीं निशम्य मुञ्जो विच्छायवदनोऽभूत्। ततो राजा ब्राह्मणं सम्प्रेष्य निशीथे शयनमासाद्य व्यचिन्तयत्–यदि राजलक्ष्मीर्भोजकुमारं गमिष्यति, तदाहं जीवन्नपि मृतः। ततश्च अभुक्त एव सः एकाकी किमपि चिन्तयित्वा बङ्गदेशाधीश्वरं वत्सराजं समाकारितवान्। वत्सराजश्च धारानगरीं सम्प्राप्य राजानं प्रणिपत्योपविष्टः। राजा च सौधं निर्जनं विधाय वत्सराजं प्राह–त्वया भोजो भुवनेश्वरी–विपिने रात्रौ हन्तव्यः, छिन्नं च तस्य शिरः मत्पार्श्वे अन्तःपुरम् आनेतव्यम्। एतन्निशम्य वत्सराजः उत्थाय नृपं नत्वा प्रावोचत्– यद्यपि देवादेशः प्रमाणम्, पुनरपि किञ्चिद् वक्तुकामोऽस्मि, सापराधमपि मे वचः क्षन्तव्यम्। देव! पुत्रवधो न कदापि हिताय भवतीति।**

**वत्सराजस्य इदं वचनमाकर्ण्य कुपितो राजा प्राह–त्वं मम सेवकोऽसि, मया यत्कथ्यते त्वया तद् विधेयम्। पुनः वत्सराजः राजाज्ञा पालनीयैवेति मत्वा तूष्णीं बभूव। अनन्तरम् अनिच्छन्नपि वत्सराजः भोजं रथे निवेश्य रात्रौ वनं नीतवान्। तत्र आत्मनो वधयोजनां ज्ञात्वा भोजः किमपि वत्सराजं कथितवान्। तद्वचनैः वैराग्यमापन्नो वत्सराजः तं न हतवान्, अपितु गृहमागत्य भोजं गृहाभ्यन्तरे भूमौ निक्षिप्य ररक्ष। पुनः कृत्रिमरूपेण भोजस्य मस्तकं कारयित्वा राजभवनं गत्वा वत्सराजो राजानं प्राह–श्रीमता यदादिष्टं तत्साधितमिति। ततो राजा भोजवधं ज्ञात्वा तं पृष्टवान्–वत्सराज! खड्गप्रहारसमये तेन किमुक्तम्?**

वत्सराजेन च राज्ञे भोजस्य अन्तिमसन्देशरूपेण तत्प्रदत्तः श्लोकः समर्पितः–

मान्धाता च महीपतिः कृतयुगालङ्कारभूतो गतः
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यान्तकः।।
अन्ये वापि युधिष्ठिरप्रभृतयो याता दिवं भूपते!
नैकेनापि समं गता वसुमती नूनं त्वया यास्यति।।

श्लोकमिमम् अधीत्य शोकसन्तप्तो मुञ्जः प्रायश्चित्तं कर्तुं आत्मनो वह्नौ प्रवेशनं निश्चितवान्। राज्ञः वह्निप्रवेशकार्यक्रमं श्रुत्वा वत्सराजः बुद्धिसागरं नत्वा शनैः-शनैः प्राह–तात! मया भोजराजो रक्षित एवास्ति। पुनः बुद्धिसागरेण तस्य कर्णे किमपि कथितम्, यन्निशम्य वत्सराजः ततो निष्क्रान्तः। पुनः राज्ञो वह्निप्रवेशकाले कश्चन कापालिकः सभां समागतः। सभामागतं कापालिकं दण्डवत् प्रणम्य मुञ्जः प्रावोचद्–हे योगीन्द्र! महापापिना मया हतस्य पुत्रस्य प्राणदानेन मां रक्षेति। अथ कापालिकस्तं प्रावोचद्–राजन्! मा भैषीः। शिवप्रसादेन स जीवितो भविष्यति। तदा श्मशानभूमौ कापालिकस्य योजनानुसारं भोजः तत्र समानीतः। 'योगिना भोजो जीवितः' इति कथा लोकेषु प्रसृता। पुनः गजेन्द्रारूढो भोजो राजभवनमगात्। सन्तुष्टो राजा मुञ्जः भोजं निजसिंहासने निवेश्य निजपट्टराज्ञीभिश्च सह तपोवनभूमिं गत्वा परं तपस्तेपे। भोजश्चापि चिरं प्रजाः पालितवान्।

## शब्दार्थाः टिप्पणयश्च

| | | |
|---|---|---|
| **समजनि** | – | उत्पन्न हुआ। |
| **जराम्** | – | बुढ़ापे को। |
| **संवीक्ष्य** | – | देखकरके। |
| **अपहाय** | – | छोड़ करके। |
| **वृथा** | – | व्यर्थ। |
| **उच्छेदः** | – | नाश। |
| **उत्सङ्गे** | – | गोद में। |
| **दिवङ्गते** | – | मृत्यु को प्राप्त करने पर। |
| **सम्प्रेष्य** | – | भेज करके। |
| **विच्छायवदनः** | – | कान्तिहीन मुखवाला। |
| **निशीथे** | – | रात में। |
| **प्रणिपत्य** | – | नमस्कार करके। |
| **सौधम्** | – | महल। |
| **विपिने** | – | वन में। |
| **मत्पार्श्वे** | – | मेरे पास। |
| **विधेयम्** | – | करना चाहिए। |
| **साधितम्** | – | किया। |
| **कृतयुगालङ्कारभूतः** | – | सत्ययुग के आभूषण स्वरूप। |
| **अधीत्य** | – | पढ़कर के। |
| **याताः** | – | चले गए हैं। |
| **दिवम्** | – | स्वर्ग को। |
| **निशम्य** | – | सुनकर। |
| **मा भैषीः** | – | मत डरो। |
| **प्रसृता** | – | फैली हुई। |
| **आरूढः** | – | चढ़ा हुआ। |
| **दशास्यान्तकः** | – | दशास्यस्य रावणस्य अन्तकः नाशकः रावण का नाश करने वाला। |

# सन्धिविच्छेदः

| | | |
|---|---|---|
| **पञ्चवार्षिकस्तदा** | – | पञ्चवार्षिकः + तदा |
| **ह्यात्मनो** | – | हि + आत्मनः |
| **मुख्यामात्यानाहूयानुजम्** | – | मुख्य + अमात्यान् + आहूय + अनुजम् |
| **पुत्रहानिर्वंशोच्छेदश्च** | – | पुत्रहानिः + वंश + उच्छेदः + च |
| **तदुत्सङ्गे** | – | तत् + उत्सङ्गे |
| **तत्पदेऽन्यम्** | – | तत्पदे + अन्यम् |
| **विच्छायवदनोऽभूत्** | – | विच्छायवदनः + अभूत् |
| **राजलक्ष्मीर्भोजकुमारम्** | – | राजलक्ष्मीः + भोजकुमारम् |
| **तदाहम्** | – | तदा + अहम् |
| **जीवन्नपि** | – | जीवन् + अपि |
| **प्रणिपत्योपविष्टः** | – | प्रणिपत्य + उपविष्टः |
| **एतन्निशम्य** | – | एतत् + निशम्य |
| **पालनीयैवेति** | – | पालनीया + एव + इति |
| **सेतुर्येन** | – | सेतुः + येन |
| **दशास्यान्तकः** | – | दश + आस्य + अन्तकः |
| **नैकेनापि** | – | न + एकेन + अपि |
| **यन्निशम्य** | – | यत् + निशम्य |
| **रक्षेति** | – | रक्ष + इति |
| **एवास्ति** | – | एव + अस्ति |
| **राजभवनमगात्** | – | राजभवनम् + अगात् |
| **तपस्तेपे** | – | तपः + तेपे |
| **भोजश्चापि** | – | भोजः + च + अपि |

© NCERT not to be republished

## अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरत–**

(क) धाराराज्ये को राजा प्रजाः पर्यपालयत्?

(ख) सिन्धुलः कस्मै राज्यम् अयच्छत्?

(ग) सिन्धुलः कस्य उत्सङ्गे भोजं मुमोच?

(घ) मुञ्जः कं मुख्यामात्यं दूरीकृतवान्?

(ङ) कः विच्छायवदनः अभूत्?

(च) मुञ्जः कं समाकारितवान्?

(छ) वत्सराजः भोजं रथे निवेश्य कुत्र नीतवान्?

(ज) कृतयुगालङ्कारभूतः क आसीत्?

(झ) महोदधौ सेतुः केन रचितः?

(ञ) कः वह्नौ प्रवेशं निश्चितवान्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**

(क) भोजः कस्य पुत्रः आसीत्?

(ख) सिन्धुलः किं विचारयामास?

(ग) सभायां कीदृशः ब्राह्मणः आगतवान्?

(घ) कः भोजस्य जन्मपत्रिकां निर्मितवान्?

(ङ) मुञ्जः किम् अचिन्तयत्?

(च) वत्सराजः भोजं कुत्र नीतवान्?

(छ) वत्सराजः कम् अनमत्?

(ज) मुञ्जः कापलिकं किम् उक्तवान्?

3. **रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**

(क) <u>सिन्धुलस्य</u> भोजः पुत्रः अभवत्।

(ख) सिन्धुलः राज्यं <u>मुञ्जाय</u> अयच्छत्।

© NCERT not to be republished

(ग) एकदा एकः ब्राह्मणः सभायाम् आगच्छत्।

(घ) मुञ्जः भोजस्य जन्मपत्रिकां अदर्शयत्।

(ङ) वत्सराजः भोजं गृहाभ्यन्तरे ररक्ष।

(च) मुञ्जः वह्नौ प्रवेशं निश्चितवान्।

(छ) मुञ्जः सभामागतं कापालिकं दण्डवत् प्राणमत्।

(ज) भोजः चिरं प्रजाः पालितवान्।

4. **प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत–**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **यथा** – | ज्ञात्वा | उपसर्गः | धातुः | प्रत्ययः |
| | ज्ञा | – | ज्ञा | क्त्वा |

(क) आलोक्य

(ख) संवीक्ष्य

(ग) अपहाय

(घ) दत्तम्

(ङ) विचार्य

(च) निशम्य

(छ) समागम्य

(ज) विधाय

(झ) भोक्तव्य

(ञ) सम्प्रेष्य

5. **प्रकृति-प्रत्ययं नियुज्य शब्दं लिखत–**

**यथा** – आ + सीद् + ल्यप् = आसाद्य

(क) जीव् + शतृ

(ख) मृ + क्त

(ग) चिन्त् + क्त्वा

(घ) हन् + तव्यत्

© NCERT not to be republished

(ङ) आ + नी + तव्यत्

(च) नि + शम् + ल्यप्

(छ) नम् + क्त्वा

(ज) आ + कर्ण् + ल्यप्

(झ) नि + क्षिप् + ल्यप्

(ञ) मन् + क्त्वा

(ट) ज्ञा + क्त्वा

(ठ) नी + क्तवतु

(ड) आ + पद् + क्त

(ढ) हन् + क्तवतु

(ण) आ + दिश् + क्त

**6. उचित अर्थेन सह मेलनं कुरुत–**

**यथा**– वसुमती – पृथ्वी

(क) निशीथे – गमिष्यति

(ख) प्रणिपत्य – समुद्रे

(ग) निशम्य – रात्रौ

(घ) पार्श्वे – प्रणम्य

(ङ) विपिने – श्रुत्वा

(च) दशास्यान्तकः – समीपे

(छ) दिवम् – वने

(ज) अधीत्य – रामः

(झ) महोदधौ – स्वर्गम्

(ञ) यास्यति – पठित्वा

© NCERT not to be republished

**7. मञ्जूषायां प्रदत्तैः अव्ययशब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयत–**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **तु** | **एव** | **तदा** | **किमर्थम्** | **पुरा** | **चिरम्** |

.............. सिन्धुलः नाम राजा आसीत्। सः .............. प्रजाः पर्यपालयत्। वृद्धावस्थायां तस्य एकः पुत्रः अभवत्। .............. सः अचिन्तयत् .............. न स्वपुत्रं भ्रातुः मुञ्जस्य उत्सङ्गे समर्पयामि। सिन्धुलः पुत्रं मुञ्जस्य उत्सङ्गे समर्प्य .............. परलोकम् अगच्छत्। सिन्धुले दिवङ्गते मुञ्जस्य मनसि लोभः समुत्पन्नः। लोभाविष्टः सः .............. भोजस्य विनाशार्थम् उपायं चिन्तितवान्।

**8. उदाहरणानुसारं लिखत–**

**(क) यथा** – पर्यपालयत्

| **उपसर्गः** | **धातुः** | **लकारः** | **पुरुषः** | **वचनम्** |
|---|---|---|---|---|
| परि | पाल् | लङ् | प्रथम पुरुष | एकवचन |

(1) प्रयच्छामि

(2) व्यचिन्तयत्

(3) यास्यति

(4) मारयिष्यति

(5) कथयन्ति

(6) भवति

(7) असि

© NCERT not to be republished

**( ख ) यथा** - आत्मनः

| **शब्दः** | **लिङ्गः** | **विभक्तिः** | **वचनम्** |
|---|---|---|---|
| आत्मन् | पुल्लिङ्गः | षष्ठी | एकवचनम् |

(1) पुत्राय

(2) लोकाः

(3) वचः

(4) भूमौ

(5) श्रीमता

(6) महोदधौ

(7) वह्नौ

**9. विशेषणं विशेष्येण सह योजयत-**

**यथा** - महाबलम् मुञ्जम्

| | | |
|---|---|---|
| (क) | बालम् | राज्यम् |
| (ख) | दत्तम् | पुत्रम् |
| (ग) | दिवंगते | भविष्यवाणीम् |
| (घ) | ज्योतिःशास्त्रपारंगतः | राजनि |
| (ङ) | इमाम् | वत्सराजम् |
| (च) | बङ्गदेशाधीश्वरम् | ब्राह्मणः |
| (छ) | सन्तप्तः | मुञ्जः |

© NCERT not to be republished

# योग्यताविस्तारः

1. अधोलिखितानाम् आभाणकानां समानार्थकानि वाक्यानि पाठे अन्वेष्टव्यानि–

   1. चेहरा फीका पड़ गया   2. जैसी आपकी आज्ञा   3. लोगों में बात फैल गई

2. पौराणिकपरम्परायां चत्वारि युगानि मतानि। तानि यथा–

   कृतयुगम् (सत्ययुगम्)
   त्रेतायुगम्
   द्वापर युगम्
   कलियुगम्

3. मान्धाता सूर्यवंशस्य प्रतापी राजा अभवत्। तेन प्रजायाः पालनं सम्यक्तया कृतम्। सः स्वयुगस्य अलङ्कारभूतः नृप आसीत्।

© NCERT not to be republished